जनाबे रसूललिल्लाह व इमाम हसन (अलै.)

(28 सफ़र)

सफर की बिस्तो हशतुम को उठे दुनिया से पैगम्बर
इसी तारीख नाना के क़री जन्नत गए शब्बर

हुयी हिज़रत ज़माने से नबी की ग्यारह हिजरी में
सन् पन्जाह में मारा हसन को हाय सम देकर

न क्योंकर दोनों आँखों से बहें आँसू के दो ग़म हैं
जिगर का जख़्म है एक दूसरा दाग़े दिले मुज़तर

जनाबे सैय्यदा रोने न पायीं बाप के ग़म में
हुए क्या-क्या सितम बादे रसुल्लाह इतरत पर

जलाने आए बाबे इल्म पैगम्बर का दरवाज़ा
यह कैसा जुल्म था दुनिया में क्यों ऐ चरखे कीनावर

गिराया फात्मा ज़हरा पा दरवाजा लईनो ने
रसन में हैफ है बाँधा गुलुऐ हैदरो सफदर

ज़नाज़ा जब हसन का निज़्दे क़ब्रे मुस्तफा पहुँचा
तो बारिश चार जानिब से हुयी तीरों की लाशों पर

न पायी क़ब्र इस बेकस ने नाना के करीं है – है
चढ़ाते थे सदा काँधे पा जिसको अपने पैग़म्बर

ज़ियारत भी नहीं मुमकिन है ऐ ‘फिक्र’ इस ज़माने में
मिटाया नजदियों ने यूँ निशाने रोज़ए अतहर